Lec-4
Smt. Shanta Singh
Sr. Asst. Prof.
Dept. of L.S.W.
L.N.S.A.K.I. College, Saharsa

श्रम-उत्पादकता को प्रभावित करनेवाले कारक (FACTORS INFLUENCING PRODUCTIVITY OF LABOUR)

श्रम-उत्पादकता से सामान्यतः प्रति मानव-घंटे या मानव-दिन भौतिक उत्पादन की मात्रा का बोध होता है। उत्पादन की इस मात्रा को श्रमिकों के प्रयासों के अतिरिक्त अन्य कारक भी प्रभावित करते रहते हैं। उदाहरणार्थ, श्रम की मात्रा या उसकी गुणवत्ता में परिवर्तन किए बिना भी मशीनों, उपकरणों, यंत्रों, कार्य-विधि, कार्य की भौतिक दशाओं आदि में सुधार लाकर श्रम-उत्पादकता बढ़ायी जा सकती है। दूसरी ओर, उत्पादन के अन्य कारकों के स्थिर रहने पर भी श्रमिकों के कौशल, सामर्थ्य एवं प्रयासों को अधिक शक्तिशाली बनाकर श्रम-उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है। इस तरह, श्रम-उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारकों को दो मुख्य श्रेणियों में रखा जा सकता है-(1) ऐसे कारक जो श्रमिकों से परे बाहरी पर्यावरण में निहित रहते हैं, जिन्हें बाह्य कारक (external factors) कहा जा सकता है; तथा (2) ऐसे कारक जो श्रमिकों में ही निहित रहते हैं, जिन्हें आंतरिक कारक (Internal factors) कहा जा सकता है। इस संबंध में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि ये कारक एक-दूसरे से जुड़े होते हैं और वे उत्पादन और उत्पादकता को सम्मिलित रूप से प्रभावित करते रहते हैं। अर्थात् हम ये कह सकते हैं कि बाह्य कारक वे कारक हैं जो श्रमिक के व्यक्तिगत गुणों से परे होते हैं और आंतरिक कारक श्रमिक के व्यक्तित्व में ही निहित होते हैं। वास्तव में, श्रम-उत्पादकता श्रमिक के कार्य करने की शक्ति (capacity) और कार्य करने की इच्छा (will) पर

Scanned with CamScanner

निर्भर करती है। श्रम-उत्पादन को निर्धारित करने वाले बाह्य और आन्तरिक दोनों कारक श्रमिक के कार्य करने की शक्ति और इच्छा को प्रभावित करते हैं। श्रम इन कारकों का लाभ उठाकर अपनी उत्पादकता में वृद्धि करता है।

1. बाह्य कारक (External Factors)

श्रम-उत्पादकता को प्रभावित करने वाले बाह्य कारकों में निम्नलिखित महत्वपूर्ण हैं—

(i) नियोजित पूँजी की मात्रा (Amount of Capital employed)— किसी उद्योग या प्रतिष्ठान-विशेष में उत्पादकता उसमें लगाई गई पूँजी पर व्यापक रूप से निर्भर करती है। जब अच्छी पूँजी लगाकर किसी औद्योगिक प्रतिष्ठान में पुराने ढंग की मशीन की जगह नए ढंग की मशीन या स्वचालित मशीन लगाई जाए तो वहाँ श्रम-उत्पादकता में अत्यधिक वृद्धि होगी। इसी प्रकार, पूँजी के माध्यम से कार्य की औद्योगिक दशाओं, उत्पादन-प्रक्रियाओं तथा श्रमिकों के लिए सुख-सुविधाओं में सुधार लाया जा सकता है और श्रम-उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है। जिस औद्योगिक प्रतिष्ठान में पूँजी का अभाव है या जिसमें अपर्याप्त पूँजी लगी हो तो वहाँ कर्मठ श्रमिकों के रहते हुए भी ऊँचे स्तर की श्रम-उत्पादकता की आशा नहीं की जा सकती।

(ii) तकनीकी दशाएँ (Technical condition)— श्रम-उत्पादकता बहुत अंश तक उत्पादन की तकनीकी या प्रौद्योगिक दशाओं पर निर्भर करती है। जिस उत्पादन में विकसित प्रौद्योगिकी का प्रयोग होता है, वहाँ श्रमिक कम समय में अधिक उत्पादन कर सकते हैं। अच्छी किस्म की मशीनों, यंत्रों, उपकरणों तथा

Scanned with CamScanner

विकसित प्रक्रियाओं के प्रयोग से श्रम-उत्पादकता ऊँचे स्तर पर बनाई रखी जा सकती है। इसके विपरीत, जहाँ उत्पादन में पुरानी जीर्ण-शीर्ण मशीनों, यंत्रों आदि का प्रयोग होता है या जहाँ उत्पादन की अविकसित प्रणाली अपनाई जाती है, वहाँ अधिक श्रम-उत्पादकता की आशा नहीं की जा सकती। एक ही श्रमिक अच्छी एवं कि विकसित तकनीकी दशाओं में अधिक तथा पुरानी एवं अविकसित तकनीकी दशाओं में कम उत्पादन करता है। भारत में अंतरराष्ट्रीय श्रम-संगठन (I.L.O) द्वारा भेजे गए उत्पादकता दूत मंडल (Productivity Mission, 1952-54) ने स्वीकार किया है, "यह अन्य स्थानों की तरह भारत में भी सर्वविदित है कि नए उपकरणों के प्रतिस्थापन से, जो या तो कई संचालकों के काम या जो पुरानी मशीनों से अधिक तेजी से काम कर सकते हैं तथा जिनके चलते मशीनों की कम संख्या की देखरेख करने की आवश्यकता होती है, श्रम-उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है।" श्रम-उत्पादकता में प्रौद्योगिकी के महत्व को देखकर कुछ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भी दोहराया गया है।

(iii) कार्य की भौतिक दशाएँ (Physical Working Conditions)— कार्य की भौतिक दशाएँ भी श्रम-उत्पादकता को प्रभावित करती रहती हैं। जिस कार्यस्थल पर सफाई, समुचित तापमान, समुचित प्रकाश तथा संवातन, सुरक्षा आदि की व्यवस्था रहती है, वहाँ श्रमिकों की उत्पादकता अधिक होती है। प्रायः, ऐसा देखा जाता है कि अच्छी मशीनों तथा उपकरणों के रहते हुए भी, कार्य की असंतोषप्रद भौतिक दशाओं के कारण श्रमिक अधिक उत्पादन नहीं कर पाते। कुशल-से-कुशल श्रमिकों के लिए भी कार्य की दुष्कर भौतिक दशाओं में अपनी पूर्ण क्षमता का प्रयोग करना कठिन होता है।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार कहा जा सकता है कि आज की औद्योगिक अवस्था में कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण उतना ही आवश्यक है जितना कि सामाजिक प्राणी के लिए सामाजिक नियमों एवं परम्पराओं का ज्ञान आवश्यक होता है। प्रशिक्षण रहित कर्मचारी ऐसे घोड़ों के समान होते हैं जिन्हें बोझा ढोने के काम में लाया जा सकता है, परन्तु युद्ध क्षेत्र में उनकी उपयोगिता प्रदान करने के स्थान पर हानिकारक ही सिद्ध होते हैं।

"प्रशिक्षण समस्या समाधान का एक साधन है। वास्तव में हमारे देश की जन-शक्ति उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन शिक्षा एवं प्रशिक्षण के आधार पर ही किया जा सकता है। यह एक प्राचीन मान्यता है कि यदि कुछ अच्छा है तो अधिकांश उससे भी अच्छा है। जिस प्रकार स्वास्थ्य को बनाने के लिए विटामिन की गोलियाँ लाभ दायक होती हैं, ठीक उसी प्रकार जन-शक्ति समस्याओं के निराकरण के लिए प्रशिक्षण लाभदायक है।" प्रशिक्षण सुविधाओं को अधिक या कम मात्रा में प्रदान करने का अर्थ प्रशिक्षण के सफल को अधिक या कम समझना है।

प्रशिक्षण एक अच्छी प्रबन्ध प्रणाली का मूल मन्त्र है। यदि प्रबन्धक कर्मचारियों से कार्य, अधिक उत्पादन प्राप्त करना चाहते हैं, उनके द्वारा बनाई गई वस्तुओं की किस्म अच्छी बनाना है तो प्रशिक्षण अत्यन्त आवश्यक है। प्रशिक्षण द्वारा कर्मचारी को न केवल कार्य के प्रति सामान्य ज्ञान प्राप्त होता है, अपितु उन्हें सौंपे गए कार्य में रुचि भी उत्पन्न होती है। सफल करने की क्षमता, वर्तमान उत्पादन प्रणालियों में सुधार करने की योग्यता तथा उत्पादन की किस्म में सुधार करने की दृष्टा में मार्ग दर्शन मिलता है। प्रशिक्षण से कर्मचारी का सामयिक मूल्यांकन एवं निरीक्षण सम्भव होता है। प्रशिक्षण के फलस्वरूप सम्भावित पदोन्नतियाँ, कौशल की आवश्यकता आदि के बारे में जानकारी प्राप्त हो जाती है।

Scanned with CamScanner

के लिए अन्य साधनों की व्यवस्था सफलता से की जा सकती है। इनके चलते श्रमिक कम समय में अधिक उत्पादन कर सकते हैं। जिन उद्यमों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहती, उनके लिए उत्पादन-वृद्धि के लिए आवश्यक संसाधनों को जुटाना कठिन होता है।

(vi) उत्पादन-प्रक्रिया (Process of Production) — श्रम-उत्पादकता को निर्धारित करने में उत्पादन-प्रक्रिया का भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है। वास्तव में, उत्पादन-प्रक्रिया बहुत अंश तक यंत्रीकरण की मात्रा या प्रकृति पर निर्भर करती है। उत्पादन-प्रक्रिया में विकसित तकनीकी का प्रयोग किया जाय तो श्रम-उत्पादकता ऊँचे स्तर की होगी। इसके विपरीत, जब उत्पादन-प्रक्रिया पुराने ढंग की है तब श्रमिकों से अधिक उत्पादन की आशा नहीं की जा सकती। आज उत्पादकता-वृद्धि के लिए उत्पादन-प्रक्रियाओं में सुधार लाने के प्रयास पर विशेष जोर दिया जाता है।

(vii) सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशाएँ (Social and cultural conditions) — कुछ समाजों में कार्य के प्रति निष्ठा की परंपरा होती है। वहाँ के लोग अपने काम लगन से किया करते हैं और व्यर्थ समय नहीं काटते। दूसरी ओर, कई समाजों में कुछ श्रेणियों के लोग सहजता या अल्प प्रयास से ही धन जुटाने में लगना पसंद करते हैं। भारत जैसे कुछ देशों में शिक्षित लोगों के बीच शारीरिक श्रम के प्रति वितृष्णा पायी जाती

Scanned with CamScanner

है। सामाजिक तनाव, वर्ग-संघर्ष, परंपरागत व्यवसाय, पारिवारिक दशाएँ, शिक्षा और निरक्षरता की मात्रा, श्रम-शक्ति में स्त्रियों एवं बालकों का अनुपात आदि श्रम-उत्पादकता को तरह-तरह से प्रभावित करते रहते हैं।

(viii) भौगोलिक पर्यावरण (Geographical environment)— श्रम-उत्पादकता पर भौगोलिक दशाओं का भी प्रभाव पड़ता है। अति गर्मी, आर्द्रता तथा वर्षावाले क्षेत्रों में लोग अधिक देर तक लगातार भारी शारीरिक श्रमवाले कार्य नहीं कर सकते। इसी तरह, वर्षाहीन एवं अति शीतवाले क्षेत्रों में लोग अपने पूरे सामर्थ्य के साथ काम नहीं कर सकते। बाढ़, तूफान, भूकंप आदि से आक्रांत प्रदेशों में उत्पादन में व्यतिरेक होते रहते हैं।

(ix) कार्य के घंटे (Hours of work)— कार्य के घंटों एवं श्रम-उत्पादकता में भी संबंध रहता है। कार्य के अत्यधिक घंटों से श्रमिकों की उत्पादनशीलता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कई घंटों तक लगातार काम करते रहने से श्रमिकों की उत्पादन-क्षमता में ह्रास होने लगता है और अंततः उनकी उत्पादकता बहुत कम हो जाती है। कार्य के कम घंटे से भी श्रम-उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अलग-अलग कार्यों के लिए कार्य के समुचित घंटे वैज्ञानिक आधार पर निर्धारित किए गए हैं। इनके अनुसार कार्य करने से अधिक-तम उत्पादन की आशा की जा सकती है।

Scanned with CamScanner

(x) शक्ति एवं कच्चे माल की आपूर्ति की नियमितता (Regularity of supply of power and raw materials)- श्रम-उत्पादकता शक्ति एवं कच्चे माल की आपूर्ति की नियमितता पर भी निर्भर करती है। जहाँ बिजली की आपूर्ति अनियमित रहती है, वहाँ श्रमिक चाहते हुए भी उत्पादन नहीं कर सकते। इसी तरह, कच्चे माल की अनियमित आपूर्ति या खराब किस्म के कच्चे माल की आपूर्ति से उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इन विभागियों में श्रम के अतिरिक्त उत्पादन के अन्य कारक अपनी पूरी क्षमता से क्रियाशील नहीं रह पाते।

(xi) सामीप्य प्रभाव (Proximity influence)- श्रम-उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारकों में सामीप्य प्रभाव भी महत्वपूर्ण होता है। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि जब किसी प्रतिष्ठान के कर्मचारी अपने काम निष्ठा से नहीं करते या जान-बूझकर काम से जी चुराते हैं, तो इसका प्रभाव समीपवर्ती प्रतिष्ठानों के कर्मचारियों पर पड़ता है और उनके कर्मचारी भी अपने काम पर कम ध्यान देने लगते हैं। इस प्रकार की बात कार्यालयों में समयानुसार मजदूरी पानेवाले कर्मचारियों के साथ विशेष रूप से लागू होती है।

(xii) अन्य कारक (other factors)- श्रम-उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कुछ अन्य महत्वपूर्ण वास्तविक कारक हैं- श्रम-संघों की भूमिका, आय के वितरण में असमानताएँ, मजदूरी-भुगतान की प्रणाली तथा श्रम-बाजार की स्थिति।

2. आंतरिक कारक (Internal Factors)

श्रम-उत्पादकता के निर्धारकों में आंतरिक कारकों से अभिप्राय

Scanned with CamScanner

ऐसे कारकों से हैं जो श्रमिक के व्यक्तित्व में ही निहित होते हैं। ये श्रमिक के शारीरिक या मानसिक गुणों से संबद्ध होते हैं जिनमें से निम्नलिखित का उल्लेख किया जा सकता है—

(i) श्रमिकों की योग्यताएँ एवं कौशल (Qualifications and Skill of Workers)— श्रम-उत्पादकता प्रत्यक्ष रूप से श्रमिकों की योग्यताओं एवं कौशल पर निर्भर करती है। जहाँ श्रमिक अपने कार्य में निपुण हैं वहाँ श्रम-उत्पादकता अधिक होती है। कई औद्योगिक संस्थानों में श्रमिक अपने कार्य में पूरी तरह दक्ष नहीं होते। ऐसे श्रमिकों की उत्पादकता अधिक नहीं होती। इसी कारण श्रमिकों की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए श्रमिकों के चयन और उनके प्रभावी प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके अतिरिक्त, श्रमिकों के कौशल में वृद्धि के उद्देश्य से कई अन्य कदम भी उठाए जाते हैं, जैसे— उनके जीवन-स्तर और स्वास्थ्य में सुधार तथा उनके लिए कल्याण-संबंधी सुख-सुविधाओं की व्यवस्था।

(ii) कार्य में अभिरुचि (Interest in Work)— किसी श्रमिक की उत्पादकता इस बात पर निर्भर करती है कि कार्य में उसकी अभिरुचि है अथवा नहीं। जिस कार्य में श्रमिक की अभिरुचि या इच्छा नहीं होती उसे वह अच्छे ढंग से नहीं करता, जिससे उसकी उत्पादकता कम होती है। इसके विपरीत, अगर श्रमिक को अपने कार्य में अभिरुचि है तो उसके कार्य करने की गति और श्रम-उत्पादकता बढ़ेगी। स्वनियोजित व्यक्तियों जैसे-

Scanned with CamScanner

कृषक, छोटे-छोटे व्यवसायों के स्वामी, कारीगर या दुकानदार जो अपने कार्य में गहरी अभिरुचि रखते हैं उनकी उत्पादकता अधिक होती है।

(iii) अंतर्जात सामर्थ्य (Innate ability of Workers)— कई श्रमिकों में विशिष्ट प्रकार के कार्य करने के लिए अंतर्जात सामर्थ्य होता है। ये सामर्थ्य शारीरिक या मानसिक या दोनों हो सकते हैं। इसकी पुष्टि अनेक मनोवैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा हुई है। अगर आवेदकों के चयन में उनकी जन्मजात प्रवृत्तियों और कार्य की माँगों में सामंजस्य पर विशेष ध्यान दिया जाय तो श्रम-उत्पादकता के बढ़ने की संभावना अधिक होती है। कई उद्योगों में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के माध्यम से श्रमिकों के सामर्थ्य का पता लगाया जाता है और उसी के अनुसार उन्हें कार्य देने की कोशिश की जाती है।

श्रम-उत्पादकता को प्रभावित करने वाले कारकों के संबंध में टिप्पणी करते हुए उचित मजदूरी समिति (Fair Wages Committee 1948) ने कहा है, "श्रम-उत्पादकता के संबंध में यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि यह कई ऐसे कारकों का शुद्ध परिणाम है जिनमें कई पर श्रमिक का कोई नियंत्रण नहीं रहता। इनमें प्रतिष्ठापित मशीन के प्रकार और उसकी स्थिति, आपूर्ति किये गए कच्चे माल की गुणवत्ता, प्रबन्धकीय एवं तकनीकी कौशल के स्तर आदि का उल्लेख किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner